International Journal of Scientific Research in Science, Engineering and Technology
© 2017 IJSRSET | Volume 3 | Issue 8 | Print ISSN: 2395-1990 | Online ISSN : 2394-4099

मोहन राकेश के नाटकों में संबंधों का यथार्थ

अंकिता मिश्रा
117/P/347 हितकारी नगर काकादेव,
कानपुर, उत्तर प्रदेश, भारत।

सारांश : मोहन राकेश के नाटकों में युगीन समस्याओं और आधुनिकता के परिणाम स्वरूप समाज व परिवारों में आए बदलावों को अभिव्यक्ति मिली है | इनके नाटकों में स्त्री-पुरुष संबंधों, व्यक्ति के अस्तित्व संकट, मानसिक द्वंद्व आदि का चित्रण ऐतिहासिक और समाज के मध्यवर्गीय परिवारों की कथा को आधार बनाकर किया गया है | इनके प्रमुख नाटकों 'आषाढ़ का एक दिन', 'लहरों के राजहंस' और 'आधे अधूरे' में समसामयिक जीवन की विभिन्न समस्याओं - पारिवारिक जीवन की विडंबनाओं, स्त्री-पुरुष संबंधों, मृत्यु बोध से उत्पन्न स्थिति, अस्तित्व का संकट, मानवीय संबंधों के मध्य आया हुआ खोखलापन और मानसिक तनाव आदि का यथार्थ चित्रण आधुनिक सन्दर्भों को आधार बनाकर किया गया है |

मुख्य शब्द : नाटक, स्त्री-पुरुष, समसामयिक, आधुनिकता, संबंध |

प्रस्तावना : मोहन राकेश युग-प्रवर्तक नाटककार हैं | जयशंकर प्रसाद के बाद हिंदी नाट्य साहित्य को इतिहास और समसामयिकता से जोड़ने का श्रेय इन्हें प्राप्त है | प्रसादोत्तर नाट्यकला विधा को इन्होंने गति प्रदान की | प्रसाद के नाटकों की तरह ही इनके नाटकों में भी ऐतिहासिकता और आधुनिकता, पुरुष-पात्रों की अपेक्षा नारी-पात्रों को महत्व, स्त्रियों के प्रभावशाली व्यक्तित्व की प्रतिष्ठा, रोमांटिक वातावरण, भावुकता, काव्यात्मकता और कल्पनाशीलता का उत्कृष्ट समावेश है | भारतीय नाट्य-परंपरा की लीक में ना बंधकर कर इन्होंने एक मौलिक मार्ग का चयन किया | इनके नाटकों में परंपरा और आधुनिकता का बहुत ही अद्भुत सामंजस्य है | इन्होंने आधुनिक मानव के द्वंद्व और जटिलताओं को उनकी संवेदनाओं के साथ अभिव्यक्त किया है | मोहन राकेश के नाटकों में उपस्थित भावुकता कृत्रिम या थोपी हुई नहीं लगती बल्कि वह स्वाभाविक रूप से उनके नाटकों का अभिन्न अंग बन कर आती है| उनका नाट्य साहित्य आधुनिक बोध से अनुप्राणित और यथार्थ से संस्पर्शित है, इसका प्रभाव उनके नाटकों के पात्रों के आपसी संबंधों पर भी दिखाई देता है |

मोहन राकेश के नाटकों में संबंधों का स्वरूप :

स्वतंत्रता प्राप्ति के बाद समाज में कई तरह के परिवर्तन हुए | संबंधों में आये इन परिवर्तनों का प्रभाव साहित्य पर भी पड़ा | मोहन राकेश के नाटकों में भी संबंधो के मध्य का अंतर्द्वन्द्व साफ़ देखा जा सकता है | "राकेश ने मूलतः आधुनिक संवेदना को, आधुनिक मानव के द्वंद्व और जटिलता को पकड़ना चाहा है | वहां इतिहास की प्रामाणिकता का प्रश्न उतना महत्त्वपूर्ण नहीं है, जितना आधुनिक संवेदना और मानवीय द्वंद्वों के सूक्ष्म जटिल स्तरों की विश्वसनीयता का |"[i]

मानव मन के इसी द्वंद्व के दर्शन उनके नाटक 'आषाढ़ का एक दिन' में होते हैं | इस नाटक की नायिका 'मल्लिका' नाटक के नायक 'कालिदास' और प्रतिनायक 'विलोम' दोनों ही प्रेम करते हैं किंतु मल्लिका, कालिदास से प्रेम करती है, विलोम से नहीं | यह उसकी नियति ही है कि मां की मृत्यु के पश्चात जीवन की कठोरता का अनुभव कर अंततः उसे विलोम से ही विवाह करना पड़ता है | मल्लिका का अस्तित्व दो हिस्सों में बँट जाता है; एक पर कालिदास का अधिकार है और दूसरे पर विलोम का | वह दो पुरुषों के मध्य जीने को विवश है | एक ही समय में वह एक व्यक्ति की पत्नी है और एक की प्रेयसी | और यह समस्या उसकी समस्या ही नहीं है, वरन यह समस्या वर्तमान समय की मूल समस्या है | इस तरह के संबंधों के पनपने के बाद उन संबंधों को जी रहा व्यक्ति ही संत्रास में नहीं जीता बल्कि इसका असर उसके साथ ही पूरे घर-परिवार पर पड़ता है | परिवार के सदस्यों के आपसी संबंध टूटने लगते हैं |

मोहन राकेश ने इस नाटक के माध्यम से मल्लिका, कालिदास और विलोम के प्रेम त्रिकोण को आधार बनाकर वैवाहिक-जीवन की वर्तमान समस्याओं को उजागर करने का प्रयास किया है | कालिदास और प्रियंगुमंजरी तथा मल्लिका और विलोम इस नाटक में पति-पत्नी के रूप में आते हैं | मानसिक स्तर पर कालिदास और मल्लिका को पति-पत्नी कहा जा सकता है; क्योंकि कालिदास और मल्लिका के बीच प्रेम संबंध रहा है | विलोम को पति होने के बाद भी मल्लिका का प्रेम प्राप्त नहीं हो पाता, कहीं न कहीं कालिदास और मल्लिका के मध्य का संबंध उसकी चेतना पर हावी रहता है | यही कारण है कि विवाह के पश्चात वह मल्लिका की उपेक्षा करने लगता है, जिससे मल्लिका के मन में तनाव उत्पन्न होता है | उधर प्रियंगुमंजरी से विवाह करने के बाद भी कालिदास, मल्लिका को नहीं भूल पाते | कालिदास, प्रियंगुमंजरी के सामने मल्लिका के संदर्भ में बातें करते रहते हैं, फलस्वरूप प्रियंगुमंजरी के मन में मल्लिका के प्रति ईर्ष्या का भाव उत्पन्न होता है और दोनों के मध्य तनाव की स्थिति उत्पन्न हो जाती है |

कालिदास और प्रियंगुमंजरी के बीच का संबंध प्रेम व आत्मीयता का न होकर सामाजिक दबाव का अधिक है | राजकवि का पद पा जाने के बाद कालिदास को विवश होकर राजपुत्री प्रियंगुमंजरी से विवाह करना पड़ता है, क्योंकि वह राजकवि के रूप में प्राप्त सुविधाभोगी जीवन को छोड़ना नहीं चाहता | प्रियंगु के साथ संबंधों में आत्मीयता न होने के कारण अंततः वह मल्लिका की ओर वापस लौटने के लिए विवश होता है |

इसी तरह मल्लिका और विलोम का संबंध भी परिस्थितियों की देन था | मां की मृत्यु के पश्चात विवश होकर मल्लिका को उसी व्यक्ति से विवाह करना पड़ता है, जिसे वह कभी भी पसंद नहीं करती थी | विवाह के पश्चात भी मल्लिका उससे घृणा करती रहती है और विलोम यह जानता है | इसे विलोम के जीवन की विसंगति भी कह सकते हैं कि मल्लिका के मन के द्वार उसके लिए कभी भी नहीं खुलते |

कालिदास और मल्लिका के व्यक्तित्व एक दूसरे से दूर होकर खंडित हो जाते हैं | भले ही कालिदास सुविधाओं के लोभ में मल्लिका की उपेक्षा कर देता है परंतु फिर भी उसके साथ बिताए गए प्रेम भरे क्षणों को भूल नहीं पाता | भले ही दोनों दूर है परंतु फिर भी कहीं न कहीं मन से एक दूसरे से जुड़े रहे हैं | इस नाटक के माध्यम से विवशता और सामाजिक व्यवस्था के दबाव में बने संबंधों के बीच की छटपटाहट को देखा जा सकता है |

मोहन राकेश का दूसरा नाटक 'लहरों के राजहंस' भी स्त्री-पुरुषों के संबंधों पर आधारित है | इस नाटक में मात्र दो प्रमुख पात्र हैं | कथा का समस्त व्यापार दोनों प्रमुख पात्रों नायक 'नंद' और नायिका 'सुंदरी' के अंतःसंघर्ष पर आधारित है | शेष पात्र श्वेतांग, श्यामांग, मैत्रेय, शशांक, भिक्षु आनंद, अलका एवं निहारिका नाटक की मूल कथा के अंग हैं | इस नाटक में पति-पत्नी के बीच दैनिक जीवन में होने वाली कलह के परिणामस्वरूप दोनों की क्या मानसिक स्थिति होती है, इसका चित्रण मिलता है | इस स्थिति को नाटक के नायक नंद के शब्दों में इस प्रकार देखा, समझा जा सकता है - "मैं चौराहे पर खड़ा एक नंगा व्यक्ति हूं, जिसे सभी दिशाएं लील लेना चाहती हैं और अपने को बचाने के लिए उसके पास कोई आवरण नहीं है | ....मन में मृत्यु का भय है.... किसी भी प्रकार की मृत्यु का, परंतु उस भय के साथ एक आकर्षण भर गया है | अस्तित्व और अनास्तित्व के बीच मेरी चेतना को एक प्रश्नचिह्न - केवल एक प्रश्नचिह्न बना कर छोड़ दिया गया है |"[ii]

नंद वस्तुतः आधुनिक मानव का प्रतीक है | 'गोविंद चातक' नंद की स्थिति पर प्रकाश डालते हुए लिखते हैं - "आधुनिक जीवन में मानव का इतना अवमूल्यन हो चुका है कि नंद जैसा ही वह जीवन का विकृत प्रतीक बन गया है |"[iii] इस नाटक के पात्रों में ऐतिहासिकता और आधुनिकता का अनुपम

सामंजस्य है | नंद की अंतर्वेदना आज के मानव की त्रासद मनःस्थिति को रूपायित करती है | "नंद का चरित्र आरंभ से अंत तक अंतर्द्वंद्व से अनुप्राणित है | उसका अंतःसंघर्ष आधुनिक मनुष्य की नियति को रेखांकित करता है | वह जब ज्येष्ठ भ्राता गौतम बुद्ध के समीप होता है, तो उसका मन अपनी प्राणवल्लभा सुंदरी के लिए भटकता है और जब सुंदरी के साथ होता है तो तथागत के वैराग्य भाव को स्मरण करता है | डॉ. जयदेव तनेजा का कथन उसकी दुविधा ग्रस्त मनःस्थिति का उद्घाटन करता है "उसकी पीड़ा मुग्ध कामुक प्रेमी एवं निवृत्तिवादी साधु के किसी भी सांचे में स्वयं को फिट न बैठा पाने की पीड़ा है |" नन्द भौतिक और आध्यात्मिक जीवन मूल्यों की टकराहट को भोगते हैं | वे भौतिकता में संचरण करते हुए ऐसे सूत्रों का अन्वेषण करने की अकुलाहट अनुभव करते हैं, जिससे जीवन को नए सिरे से अर्थ दिया जा सके |"[iv]

नंद और सुंदरी के वैवाहिक जीवन के विघटन और उनकी व्यक्तिगत त्रासदी का बहुत बड़ा उत्तरदायित्व सुंदरी पर ही है | सुंदरी की दृष्टि एक पक्षीय है; वह केवल देह के स्तर पर जीने वाली भोगवादी स्त्रियों का प्रतिनिधित्व करती है | सुंदरी की दृष्टि जीवन के प्रति अपूर्ण है परंतु वह उसे पूर्ण समझकर अपनाती है, यही कारण है कि वह अपने तीव्र मोह की तरह ही तीव्र चोट भी खाती है

सुंदरी उन आधुनिक स्त्रियों का प्रतिनिधित्व करती है जो पति को अपने वशीभूत रखना चाहती हैं; यही कारण है कि वह देवी यशोधरा पर व्यंग्य करती हुई कहती है - "नारी का आकर्षण पुरुष को पुरुष बनाता है, तो उसका अपकर्षण उसे गौतम बुद्ध बना देता है |"[v] वास्तव में देखा जाये तो वर्तमान समय में मानव-संबंधों में परस्पर गांठ पड़ गई है | परस्पर अलगाव और अजनबी पन की स्थितियां उत्पन्न हो गई हैं | व्यक्ति समाज के साथ ही अब स्वयं से भी कटने लगा है | सुंदरी, नंद को नगण्य बना देती है, यह बात उसे सर्वाधिक पीड़ित करती है | सुंदरी की दृष्टि जितना नंद को देखना चाहती है उसके साथ रहते हुए वह केवल इतना सा ही होता है | सुंदरी द्वारा अपनी सीमाओं को इतना सीमित कर दिया जाना नंद को कचोटता है, और वह भीतर ही भीतर टूट जाता है | नंद का संशय और अंतर्वेदना आदि सब इसी के परिणाम स्वरुप उत्पन्न होते हैं |

इस नाटक में नंद और सुंदरी के माध्यम से आधुनिक समाज के वैवाहिक जीवन की बेचैनी और आंतरिक संघर्षों की मार्मिक अभिव्यक्ति हुई है | नंद पत्नी सुंदरी के रूपजाल में बंधे हुए हैं वह पत्नी को किसी प्रकार का कष्ट नहीं देना चाहते और न ही उसके मामलों में हस्तक्षेप ही करना चाहते हैं | उनका समर्पण भाव पत्नी के प्रति इतना ज्यादा गहरा है कि पत्नी की इच्छा भी नंद के लिए आदेश के समान है जबकि सुंदरी, नंद के आंतरिक रूप को नहीं समझ पाती, उसके व्यक्तित्व को अपने

अहंकार के समक्ष नकार देती है | सुंदरी का अहंकारी व्यक्तित्व नंद की आकांक्षाओं, इच्छाओं आदि को कुचल डालता है | नंद दृढ़तापूर्वक सुंदरी के समक्ष स्वयं को स्थापित ही नहीं कर पाता |

स्त्री और पुरुष के मध्य के संबंधों के भिन्न-भिन्न स्वरूप मोहन राकेश के नाटकों में मिलते हैं | स्त्री-पुरुष के संबंधों की चरम परिणीति 'आधे अधूरे' में दिखाई देती है | किस प्रकार वर्तमान समय में एक ही छत के नीचे रहते हुए पति और पत्नी एक दूसरे से कटे और टूटे हैं, किस प्रकार परिवार में परस्पर संबंधों का विघटन हो रहा है, इन सब का चित्रण 'आधे अधूरे' में कुशलतापूर्वक किया गया है | यह नाटक समकालीन जीवन को रेखांकित करता है | मोहन राकेश ने इस नाटक में पहली बार वर्तमान काल की संवेदना का सीधा साक्षात्कार कराया है | इसी विशेषता के कारण यह नाटक आधुनिक संदर्भों का प्रत्यक्ष उदाहरण बन गया है | इस नाटक को 'मील का पत्थर' की संज्ञा प्रदान की गई है, क्योंकि यह जीवन की यथार्थता और नाटककार की भोगी गयी वास्तविकता का प्रमाण है |

नाटक के सभी चरित्र मानसिक अस्थिरता से ग्रस्त हैं, उनकी संवेदना और मनःस्थिति विस्फोटक है - "नाटक के सभी पात्र एक साथ रहते हुए भी धीरे-धीरे क्षरित होते हैं, अतः आधे अधूरे हैं | वह पूरेपन की खोज में भटकते रहते हैं | आर्थिक अभाव उन्हें स्थिर नहीं रहने देते | उन्हें अस्तित्व-बोध का संकट भटकाता रहता है | चरित्रों का ऐसा भटकाव हिंदी के किसी अन्य नाटक में दृष्टिगोचर नहीं होता |"[vi]

'आधे अधूरे' का 'महेंद्रनाथ' जीवन के संघर्षों में असफल, थका-हारा बेरोजगार पति है | उसकी पत्नी 'सावित्री' नौकरी करती है और वही घर को चला रही है | सावित्री के लिए महेंद्रनाथ कभी भी पूर्ण पुरुष नहीं बन पाया | अपने इसी अधूरेपन को पूरा करने और पूर्ण पुरुष की तलाश में वह दूसरों के पास भटकती रहती है | वह पति की अधूरी एवं असहाय स्थिति से ऊब जाती है और अंततः कह उठती है "मत कहिए मुझे महेंद्र की पत्नी |"[vii] वास्तव में सावित्री ऐसे पुरुष की तलाश में रहती है जिसका अपना एक व्यक्तित्व हो | महेंद्रनाथ उसे लिजलिजा चिपचिपा और आत्मविश्वासहीन लगता है | एक पूर्ण पुरुष की तलाश में वह अनेक पुरुषों से टकराती है और टकराते टकराते अंततः टूट जाती है | वह जुनेजा, जगमोहन, शिवजीत, मनोज के संपर्क में आती है परंतु अंततः सभी उसे अधूरे लगते हैं | सावित्री अपनी बाकी की जिंदगी को अपने अनुसार जीना चाहती है | वह बार-बार चाहती है कि इस घर से निकल जाए परंतु फिर भी अंततः लौटकर उसी तनावग्रस्त घर में आ जाती है | महेंद्रनाथ की स्थिति भी सावित्री से अलग नहीं है | महेंद्र को भी सावित्री से कुछ अपेक्षाएं हैं परंतु एक भी पूरी नहीं हो पाती | वह स्वयं पुकारता है कि वह जीवित क्यों है, वह भी ऊबकर घर छोड़ने

की बात सोचता है परंतु छोड़ नहीं पाता | खालीपन से भरे हुए उदासी भरे वातावरण में जीते हुए स्वयं के निरर्थक होने की अनुभूति का बोझ ढोने के लिए विवश है | दोनों पति-पत्नी के बीच कटुता होने के बावजूद दोनों एक ही घर में एक साथ रहने के लिए विवश हैं |

महेंद्र नाथ का अपना घर और पत्नी बच्चे होने के बावजूद ज्यादातर समय बाहर अपने दोस्तों के साथ गुजरता है | वह दोस्तों की खुशियों के लिए प्रयास किया करता है | इसके साथ ही वह यह भी चाहता है कि उसकी पत्नी सावित्री भी उसके साथियों के लिए वैसा ही करे जैसा कि वह चाहता है | परंतु सावित्री यह सब पसंद नहीं करती और जब सावित्री यह सब करने से इंकार करती है तो वह सावित्री को मारने पीटने से भी नहीं चूकता | वह चाहता है कि सावित्री के अच्छे बर्ताव से उसकी पोजीशन लोगों के बीच अच्छी बने और इसी कारण सावित्री, महेंद्रनाथ से नफरत करने लगती है | पति-पत्नी के बीच मधुर संबंध खत्म हो जाता है क्योंकि दोनों ही एक दूसरे की अपेक्षाओं को नहीं समझते | महेंद्रनाथ पत्नी को अपनी संपत्ति की तरह बरतना चाहता है, यही कारण है कि दोनों के बीच का आत्मिक संबंध समाप्त हो जाता है |

नाटक की कथावस्तु का जन्म आज के बदलते परिवेश में महानगरीय मध्यवर्ग के अभावपूर्ण जीवन एवं आपसी तनावपूर्ण परिस्थितियों के मध्य हुआ है | इसका कथानक एक ऐसे मध्यवर्गीय घर से संबंधित है जिसकी समस्त समस्याओं के मूल में आर्थिक अभावग्रस्तता है | आर्थिक अभाव और आर्थिक दबाव के फलस्वरुप परिवार के मध्य के संबंध विषाक्त हो जाते हैं | नायिका सावित्री की अतृप्त आकाँक्षाओं के मूल में भी आर्थिक अभावग्रस्तता ही मुख्य कारण है | सावित्री के इस कथन से इस भाव की पुष्टि होती है कि वह महेंद्र को पूरी तरह से आत्मनिर्भर व्यक्ति के रूप में देखना चाहती है - "जब से मैंने उसे जाना है, मैंने हमेशा हर चीज के लिए किसी-न-किसी का सहारा ढूंढते पाया है |"[viii] सावित्री कभी भी उसे अपने पैरों पर खड़ा नहीं देखती है और जब भी वह उसे आत्मनिर्भर व्यक्ति बनाना चाहती है तो बदले में वह उसे सताता है | बेटी 'बिन्नी' के इस संवाद से इस भाव की पुष्टि हो जाती है - "आप शायद सोच भी नहीं सकते क्या-क्या होता रहा है यहाँ | डैडी का चीखते हुए मम के कपड़े तार-तार कर देना.... उनके मुंह पर पट्टी बांधकर उन्हें बंद कमरे में पीटना..... खींचते हुए गुसलखाने में कमोड पर ले जाकर (सिहरकर) मैं तो बयान भी नहीं कर सकती कि कितने-कितने भयानक दृश्य देखे हैं इस घर में मैंने |"[ix] पति के अमामानवीय व्यवहारों का बदला सावित्री तब लेती है जब आर्थिक रूप से घर चलाने की जिम्मेदारी उसके हाथ में आ जाती है | घर का आर्थिक आधार बन जाने के बाद वह पति को रबड़ स्टैंप मात्र भी समझने को तैयार नहीं होती | इस तरह की स्थितियों में किसी भी परिवार में पति-पत्नी के मध्य अच्छे संबंधों की कल्पना करना ही व्यर्थ है|

दोनों पति-पत्नी के मध्य कहीं किसी भी धरातल पर आपस में सामंजस्य नहीं है| दोनों ही अपने-अपने विचारों के अनुसार जीवन जीते हैं| एक दूसरे को समझ नहीं पाते और अधूरेपन में जीते हुए आत्मपीडन झेलते रहते हैं| सावित्री जीवन में सफल हो कर जीना चाहती है| वह पति की तरह असफल जीवन नहीं जीना चाहती यही कारण है कि वह बार-बार इसके लिए प्रयास करती रहती है| महेंद्रनाथ चाहता है कि उसकी पत्नी उसकी प्रतिद्वंद्वी ना बने बल्कि उसकी सहयोगी बनकर उसका साथ निभाए, परंतु यह हो नहीं पाता इसलिए उनमें अलगाव की स्थिति उत्पन्न हो जाती है|

परिवार और दांपत्य की पूर्णता के लिए पति-पत्नी का एक साथ सामंजस्य बना कर चलना अनिवार्य है| पति और पति एक दूसरे के अर्धांश हैं, एक के बिना दूसरा अधूरा है यही कारण है कि दोनों ही आधा-अधूरा जीवन जी रहे हैं| विडंबना तो यह है कि स्वयं अधूरा होकर भी व्यक्ति दूसरे के अधूरे पन को सह नहीं पाता और न ही उसके साथ मिलकर पूर्ण ही हो पाता है| दोनों ही आधे अधूरे हैं परंतु फिर भी एक दूसरे को नीचा दिखाते हैं और कोसते रहते हैं| वर्तमान जीवन का सच यही है कि हर व्यक्ति दूसरे व्यक्ति में पूर्णता की प्राप्ति कर लेना चाहता है| यही दांपत्य जीवन और पारिवारिक संबंधों के विघटन का मुख्य कारण है|

माता-पिता और परिवार में उत्पन्न असंतोष, बिखराव, तनाव आदि का प्रभाव उनकी संतानों के जीवन पर भी पड़ता है | इस नाटक में सावित्री और महेंद्रनाथ की बड़ी बेटी बिन्नी के जीवन में यह बिखराव देखा जा सकता है| बिन्नी ने मनोज के साथ प्रेम विवाह किया है परंतु प्रेम होने के बावजूद एक दूसरे को अभी तक समझ नहीं सके | गुजरते वक्त के साथ दोनों के मध्य का प्रेम शुष्क हो गया है| विवाह करते वक्त उसे लगा था कि वह मनोज को पूरी तरह जानती है परंतु इतना समय गुजर जाने के बाद अब उसे लगता है कि उसने मनोज को जाना ही नहीं | वह किसी तरह अपना जीवन काट रही है और उनके दांपत्य में अवसाद संतोष तृप्ति के भाव ने अपना घर बना लिया है| दोनों के संबंधों में भी ठहराव आ चुका है और वह भी जीवन में किसी भी प्रकार का संतोष नहीं प्राप्त कर पाई | अपने संबंधों में संतुलन न बन पाने की वजह वह अपने घर के वातावरण को मानते हुए सावित्री से कहती है - "मैं इस घर से ही अपने अंदर कुछ ऐसी चीज लेकर गई हूं, जो किसी भी स्थिति में मुझे स्वाभाविक नहीं रहने देती |"[x]

बिन्नी में अपनी मां के चारित्रिक अवगुण स्वाभाविक रूप से ही विकसित हो गए हैं| वह मनोज को अपनी जूतियों पर रखना चाहती है, उस पर सदैव हावी रहना उसकी आदत बन चुकी है | मनोज के द्वारा किया गया किसी भी प्रकार का प्रतिवाद वह नहीं सह सकती, फलतः तरह-तरह से अपने पति को पीड़ित करने की योजनाएं बनाती रहती है | पुष्पा बंसल इस संदर्भ में लिखती हैं - "वास्तव में

बिन्नी में सावित्री के व्यक्तित्व का प्रतिबिंब है | उसका चरित्र विरूप और विकृत है | उसका भविष्य भी ठीक सावित्री जैसा होने जा रहा है | अपने दांपत्य की दरारों को भरने के लिए उसे भी बाहर का सहारा लेना पड़ेगा और वह नए सहारे भी वहीं तक ही अधूरे साबित होंगे | इस प्रकार बिन्नी कल की सावित्री है |"[xi]

निष्कर्षतः यह कहा जा सकता है कि आधुनिक युग में बाहरी परिवेश ने मानव के आपसी संबंधों, विशेष रूप से स्त्री और पुरुषों के मध्य के संबंधों में तनाव, टूटन को उत्पन्न किया है | वास्तव में आधुनिकता की दौड़ ने मानवीय मूल्यों को काफी हद तक प्रभावित कर दिया है |

सन्दर्भ :

[i] हिंदी के प्रमुख नाटककार, डॉ. मालिनी मिश्रा, पृष्ठ-153, 154

[ii] लहरों के राजहंस, मोहन राकेश, पृष्ठ-122

[iii] आधुनिक नाटक के मसीहा, मोहन राकेश; गोविन्द चातक, पृष्ठ-75

[iv] हिंदी के प्रमुख नाटककार, डॉ मालिनी मिश्रा, पृष्ठ-168

[v] लहरों के राजहंस, मोहन राकेश, पृष्ठ-37

[vi] हिंदी के प्रमुख नाटककार, डॉ मालिनी मिश्रा, पृष्ठ-175

[vii] आधे अधूरे, मोहन राकेश, पृष्ठ-86

[viii] आधे अधूरे, मोहन राकेश, पृष्ठ-84, 85

[ix] आधे अधूरे, मोहन राकेश, पृष्ठ-79

[x] हिंदी के प्रमुख नाटककार, डॉ मालिनी मिश्रा, पृष्ठ-176

[xi] मोहन राकेश का नाट्य साहित्य, डॉ पुष्पा बंसल, पृष्ठ-50